“ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए”

(16:1–33)

इन आयतों में से प्रचार करने से पहले सप्ताह, हमारे इलाके में दो दुखद घटनाएं घटी थीं। पहली घटना बेसबॉल खेल रहे एक पन्द्रह वर्षीय लड़के की मृत्यु थी। एक शाम बेसबॉल खेलते हुए पहली इनिंग में ही उसने बड़ी अच्छी हिट लगाते हुए अपनी टीम के लिए पहला अंक प्राप्त किया था। फिर, अपने साथियों की ओर जाते हुए, उसकी मृत्यु हो गई थी। अभी वह अच्छा भला था और अगले ही पल उसकी मृत्यु हो गई। उस सप्ताह की दूसरी दुखद घटना पैंतीस वर्ष की एक मसीही स्त्री की हत्या और मृत्यु के निकट पहुंची उसकी ग्यारह वर्षीय लड़की थी। कुछ ही दिनों में हमारे दो भ्रम टूट गए थे पहला यह कि जवान और स्वस्थ लोगों पर मृत्यु नहीं आती, दूसरा यह कि हमारे समाज में हिंसात्मक अपराध नहीं हैं। कहने की आवश्यकता नहीं, कि इस सप्ताह की घटनाओं ने हमें परेशान कर दिया और हम बहुत घबरा गए थे। आश्चर्य की बात है कि यूहन्ना 16 अध्याय में चेलों की मनोस्थिति का वर्णन करने के लिए “व्याकुल” और “भयभीत” शब्द सबसे उपयुक्त हैं। परिणामस्वरूप, एक बहुत ही कठिन सप्ताह के लिए यह बिल्कुल उपयुक्त पाठ था।

कई बार प्रचार के लिए संदेश तैयार करना याकूब द्वारा परमेश्वर के साथ कुश्ती करने वाली उस रात की तरह होता है।[1] यब्बोक नदी के किनारे याकूब अकेला एक रात-दिन निकलने तक अपने विचारों, यादों, भयों और परमेश्वर के दूत से कुश्ती करता रहा था। अगले दिल जब भोर होने लगी, तो याकूब से कुश्ती करने वाले ने उसे छोड़ने की आज्ञा दी ताकि वह जा सके। याकूब ने इन्कार कर दिया और कहा, “जब तक तू मुझे आशीर्वाद न दे तब तक मैं तुझे जाने न दूंगा” (उत्पत्ति 32:26)। प्रचार करने का अर्थ कई बार ऐसा ही हो जाता है: प्रचारक कठिन आयतों का अर्थ समझने के लिए देर तक संघर्ष करते हैं और कई बार उन्हें लगता है कि कोई निष्कर्ष नहीं निकला। परन्तु संघर्ष हमें निराश नहीं करता बल्कि इससे तो हमें उस आयत को तब तक “पकड़े” रखने की प्रेरणा मिलती है जब तक उससे अन्त में हमें आशीष नहीं मिल जाती।

यूहन्ना 16 अध्याय के साथ मेरा अनुभव ऐसा ही रहा है। पूरा सप्ताह यही लगता रहा कि इसके संदेश को संक्षिप्त और संगठित करने के मेरे हर प्रयास में रुकावट पड़ रही है। बहुत कुछ हो रहा था और बहुत कुछ कहा जा रहा था। फिर, एक सुबह काम पर जाते हुए, मैंने अपने आपको समझाया कि जो विशेषताएं मुझे इस भाग से सबसे अधिक डराती थीं वही इस अध्याय को अधिक शक्ति और आज की हमारी स्थिति में प्रासंगिकता देती हैं; परन्तु जीवन भी तो ऐसा ही करता है! यूहन्ना 16 का घुमावदार, उलझाने वाला और आवश्यक संदेश शायद आज के लिए बिल्कुल उपयुक्त है।

इस अध्याय के संदेश को जानने से पहले, हमें यह याद रखना जरूरी है कि यह अध्याय सुसमाचार की इस पुस्तक में कहां पर आता है। सार्वजनिक सेवकाई के बारह अध्यायों के बाद 13 से 17 अध्यायों में यीशु और उसके चेलों के बीच हुई बातचीत अधिक है। अपनी मृत्यु के निकट आने पर वह उनके बारे में बहुत चिन्तित था। जिस कारण इन चार अध्यायों में मिलने वाली शिक्षाएं उसके चले जाने के बाद उन्हें तैयार करने के लिए ही थीं। हमारे पाठ अर्थात अध्याय 16 के आरम्भ होने तक, यीशु ने उनके पांव धोए थे, यहूदा यीशु को पकड़वाने के लिए चला गया था, यीशु ने उन्हें बता दिया था कि वह ''दूर जा रहा'' है और उसने उन्हें आने वाले सताव के बारे में भी चेतावनी दे दी थी।

''पवित्र आत्मा की मानो'' (16:5-15)

अपनी विदाई की तैयारी जारी रखते हुए, यीशु अपने चेलों को बताने लगा कि उसका जाना उनके लिए लाभदायक था (16:7), उसने उन्हें स्मरण दिलाया कि उसके जाने पर ही ''सहायक''[2] आ सकता था। इस सहायक अर्थात पवित्र आत्मा ने उस सेवकाई को जो यीशु ने आरम्भ की थी, आगे बढ़ाना था। यीशु ने कहा:

> मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा। वह मेरी महिमा करेगा (16:12-14क)।

कई बार पवित्र आत्मा के बारे में कोई चर्चा उलझन और फूट का कारण बन जाती है। यद्यपि इन आयतों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो पवित्र आत्मा के बारे में कहा जा सकता हो, परन्तु इसमें आत्मा का उद्देश्य अवश्य बताया गया है: यीशु के अनुयायियों को सब सत्य तक पहुंचाना। आज मसीही लोगों के लिए, सब सत्य उस प्रकाशन में होना चाहिए जो आत्मा ने प्रेरितों पर प्रकट किया जब उसने ''सब सत्य में'' उनकी अगुआई की थी। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि आत्मा का उद्देश्य अपनी ओर ध्यान आकर्षित करवाना नहीं बल्कि पुत्र की महिमा करना है। आत्मा से सम्बन्धित हर शिक्षा इन दो सच्चाइयों से मेल खाती होनी चाहिए।

''शारीरिक सम्बन्ध की अपेक्षा न करें''
(16:16-22)

यीशु ने बहुत सी बातें कहीं जिन्हें आज हम आसानी से समझ जाते हैं, परन्तु उन बातों से उस समय उसके चेले काफी उलझन में पड़ गए थे। 16:16–22 में यही हुआ। यीशु ने बताया था कि आने वाले दिनों में वे उसे नहीं देखेंगे, परन्तु ''थोड़ी देर में'' उन्होंने उसे फिर देखना था (16:16, 17)। मसीह की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के विषय में मसीही लोग बातें करते रहते हैं और इन घटनाओं को वे हर रविवार प्रभु भोज लेते समय स्मरण करते और मनाते हैं। परन्तु क्रूस से पहले कोई इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था। चेलों को लगता था कि यीशु ऐसी पहेलियों में बातें करता है जिन्हें समझना सम्भव नहीं है।

यीशु अपने जाने के लिए चेलों को तैयार करता रहा; क्योंकि चेले उस रात चाहे कितनी भी उलझन में थे, यीशु जानता था कि अगले दिन जब वह क्रूस पर चढ़ाया जाएगा तो वे और उलझन में पड़ेंगे। इसलिए, उसने बताना जारी रखा कि क्या होने वाला था। उसने उन्हें बताया कि वे रोएंगे जबकि संसार आनन्द करता होगा; फिर भी उसने उन्हें बताया कि थोड़ी देर बाद, जगत रोएगा परन्तु चेले आनन्द कर रहे होंगे (16:20–22)। हम देख सकते हैं कि यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान में ऐसा ही हुआ, परन्तु उस समय चेलों को यह महत्वपूर्ण सच्चाई समझ नहीं आई थी।

''मेरे नाम से मांगो'' (16:23-28)

यीशु ने उन्हें यह बताते हुए कि पिता के पास उसके ऊपर जाने के बाद उनकी स्थिति बेहतर कैसे होगी, चेलों को सांत्वना देते हुए तैयार करना जारी रखा: ''उस दिन तुम मुझ से कुछ न पूछोगे: मैं तुम से सच सच कहता हूं, यदि पिता से कुछ मांगोगे, तो वह मेरे नाम से तुम्हें देगा। अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा; मांगो तो पाओगे ताकि तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए'' (16:23, 24)। यद्यपि वे समझ नहीं पाए कि यह कैसे सम्भव हो सकता है, परन्तु यीशु ने उन्हें आश्वस्त किया कि उसके स्वर्ग में वापस चले जाने पर संसार में अकथनीय आत्मिक शक्ति भेजी जाएगी: उसका लहू जो जगत के पापों के लिए बहाया जाने वाला था और पवित्र आत्मा जिसने उसका स्थान लेना था दो ऐसी शक्तियां थीं जिनसे संसार को अकल्पनीय ढंग से आशीष मिलनी थी! यीशु ने उनके साथ सांकेतिक भाषा में बात की थी, क्योंकि उस समय वे केवल इस प्रकार ही समझ सकते थे। परन्तु, शीघ्र ही उन्हें ''स्पष्ट'' रूप से समझ में आ जाना था कि उसके कहने का क्या अर्थ था (16:25)। उसने उन्हें आश्वासन दिया कि उसके नाम से कुछ मांगने पर, उन्हें उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर मिलेगा (16:26–28)।

''मुझ पर विश्वास रखो''
(16:29-32)

सांत्वना देने के यीशु के शब्दों का उत्तर चेलों ने उसमें अपने विश्वास के अंगीकार से

दिया। उन्होंने कहा, *"अब हम जान गए, हैं कि तू सब कुछ जानता है, और तुझे प्रयोजन नहीं, कि कोई तुझ से पूछे, इस से हम प्रतीति करते हैं, तू परमेश्वर से निकला है"* (16:30)। पुन:, यूहन्ना रचित सुसमाचार में हमें "प्रतीति या विश्वास" शब्द के महत्व की समझ आती है। परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु में विश्वास दिलाना ही सुसमाचार की इस पुस्तक का लक्ष्य है (20:30, 31)। हमें याद करवाया जाता है कि यूहन्ना ने "विश्वास" शब्द का इस्तेमाल कई तरह से किया है। कुछ आयतों में इसका अर्थ है कि किसी व्यक्ति ने किसी दावे को सत्य माना। अन्य आयतों में इसका अर्थ है कि किसी ने यीशु को परमेश्वर का पुत्र माना। कहीं इसका अर्थ यीशु में विश्वास रखकर "लोगों में जाना" है, जबकि अन्य स्थानों पर इसका अर्थ यीशु के पीछे चलने की वचनबद्धता का "दृढ़ निश्चय" है। 16:30 में चेले कह रहे थे कि उन्होंने यीशु के दावे को सत्य माना था अर्थात उनका विश्वास था कि वह "परमेश्वर की ओर से आया है।"

यीशु ने उनके विश्वास को चुनौती दी, क्योंकि वह जानता था कि वे अपने विश्वास के लिए बलिदान होने को अभी तैयार नहीं थे (16:32)। उसने उनसे कहा कि वे सब उसे अकेला छोड़ जाएंगे। इस समय, हम यीशु को यूहन्ना रचित सुसमाचार की घटनाओं और उसके दावों पर विश्वास करने की चुनौती देते देखते हैं। क्या हम सचमुच विश्वास करते हैं? हम कहते हैं कि हमारा विश्वास है कि वह परमेश्वर का पुत्र है, परन्तु क्या हम तब भी विश्वास में बने रहेंगे जब इसका अर्थ उसके लिए कष्ट उठाना हो? यूहन्ना रचित सुसमाचार चेलों के विश्वास की ही नहीं बल्कि हमारे विश्वास की भी कहानी है!

"तुम्हें मुझ में शान्ति मिले" (16:33)

अध्याय 16 में यदि यीशु की शिक्षाओं को मिलाकर एक केन्द्रीय भाव बनाना हो, तो वह आयत 33 का संदेश ही होना चाहिए। हर चेतावनी, भविष्यवाणी और प्रतिज्ञा चेलों को उनके जीवन के सबसे कठिन समय में शान्ति देने के उद्देश्य से दी गई थी! यीशु ने अपने चेलों से कभी यह प्रतिज्ञा नहीं की कि उनके जीवन में कष्ट नहीं आएगा, बल्कि उसने यह प्रतिज्ञा अवश्य दी कि दुख में भी वह उन्हें परमेश्वर की शान्ति देगा: "मैं ने ये बातें तुम से इसलिए कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है" (16:33)। यहां पर "मैं" शब्द पर ज़ोर दिया गया है। अगले चौबीस घण्टों में चेलों को कई तरह से यह लगना था कि संसार जीत गया है और बुराई की विजय हो गई है। यीशु ने उन्हें दृढ़ता से यह कहकर कि उसने जगत को जीत लिया है इसके लिए तैयार किया। यह बात भी महत्वपूर्ण है कि "जीत लिया है", यूनानी भाषा में पूर्णकाल में है। इसलिए इसमें यह अर्थ निहित है कि "मैंने संसार को पहले ही जीत लिया है, और मेरे जीतने का परिणाम पहले से ही है!" जबकि मूलत: अगले दिन तक यीशु क्रूस पर नहीं चढ़ा था, परन्तु उसने चेलों को स्पष्ट आश्वासन दे दिया था कि सब कुछ योजना के अनुसार चल रहा है और थोड़ी देर बाद होने वाली घटनाओं से वे आशीषित होंगे।

सारांश

यद्यपि, पहले लग सकता है कि हमारी परिस्थितियां चेलों की परिस्थितियों से बहुत अलग हैं जिन्होंने इस अध्याय में पहले सांत्वना के शब्द सुने थे, परन्तु हमारी दुनिया क्या सचमुच उनसे अलग है ? उनकी तरह, हमें भी अनापेक्षित कष्टों का सामना करना पड़ता है, हम भी परमेश्वर में भरोसा खोने की परीक्षा में पड़ जाते हैं, दावा करते हैं कि हम विश्वास करते हैं जबकि अन्त में उसका इन्कार करते हुई दिखाई देते हैं और इस उथल-पुथल भरे संसार में शान्ति के लिए तड़पते हैं। यीशु चेलों को आने वाले कठिन संघर्षों के लिए तैयार करना चाहता था। निश्चय ही यदि हम अपने जीवन में आने वाले कल की प्रत्येक बात का सामना करने के लिए उसकी बातों पर ध्यान दें तो हमारे लिए भी उनका वही उद्देश्य है: ''दुख की अपेक्षा रखो और तैयार रहो'' कठिन समयों में परमेश्वर की शान्ति बनाए रखने के लिए यूहन्ना 16 में यीशु का फार्मूला है।

जून, 1995 में एक मिशन में अमेरिकी हवाई सेना के एक पायलट, कैप्टन स्कॉट फ्रांसिस ओ'ग्रेडी के बोसनिया हर्ज़ेगोविना के ऊपर उड़ान भरते हुए जहाज को गोली मारकर नीचे गिरा दिया गया। वह पैराशूट से सुरक्षित नीचे उतर आया, परन्तु उसे मालूम था कि जिन लोगों ने उसे गोली मारी है, वे उसे बन्दी बनाने के लिए ढूंढ़ते होंगे। वायुसेना के प्रशिक्षण के दौरान अपने कठिन अभ्यास का इस्तेमाल करते हुए, ओ'ग्रेडी नौसेनिकों द्वारा उसे बचाने के लिए आने से पहले छह दिन तक शत्रु सिपाहियों से छुप कर बैठा रहा। उस दौरान वह बारिश का पानी पीकर और खटमल खाकर जीवित रहा। जब उसके भयंकर अनुभव के लिए ओ'ग्रेडी का इंटरव्यू हुआ तो उसने अपने बचाव का सारा श्रेय सेना में लिए गए प्रशिक्षण को दिया। वायुसेना ने उसे मुश्किल आने का पूर्वानुमान लगाने की शिक्षा दी थी, सो जब मुश्किल आई तो वह तैयार था।

आज यीशु नहीं चाहता कि उसके चेले जीवन की सब भयंकर सम्भावनाओं की चिन्ता करें (मत्ती 6:25-34), परन्तु वह हमें यह बताना चाहता है कि कष्ट तो चेले के जीवन का एक भाग हैं। इस बात को जानते हुए, हम तैयार हो सकते हैं, ताकि जब कभी मुश्किल आए तो हमारी आत्मिक मृत्यु न हो।

इस अध्याय से सुझाव मिलता है कि बहुत बार हमें वह सुनने की आवश्यकता होती है जो हमें लगता है कि उस समय सुनना नहीं चाहिए। लोग कई बार बाइबल क्लास या संदेश पर शिकायत करते हैं, ''मुझे यह सब बताने की आवश्यकता नहीं है।'' सच्चाई यह है कि हमें बहुत बार उस समय के लिए सबक सुनने की आवश्यकता होती है ''जो हम पर अभी नहीं आया।'' कहने का अभिप्राय यह है कि हमें वे बातें सुनने की आवश्यकता होती है जो हम अभी सुनना नहीं चाहते, भविष्य में आने वाली किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए हम तैयार हों। निश्चय ही जो कुछ यीशु ने अध्याय 16 में कहा था उससे चेले आनन्दित नहीं हुए थे, परन्तु यीशु जानता था कि उन्हें यह सुनना चाहिए। इसी प्रकार, हमें पवित्र शास्त्र के सम्पूर्ण संदेश को सुनने की आवश्यकता है। फिर जैसा कि पौलुस ने कहा है, हम किसी भी बात के लिए जो हमारे मार्ग में आती है, पूरी तरह से तैयार होंगे (2 तीमुथियुस 3:14-17)।

बारह और चौदह वर्ष की मेरी दो बेटियां हैं। पिता होने के कारण इन दिनों घड़ी की आवाज़ मेरे कानों में तेज़ होती जा रही है। मैं जानता हूं कि मेरी बेटियों के साथ मेरा समय बहुत तेजी से बीत रहा है, और कुछ ही वर्षों में वे मेरे घर से विदा हो जाएंगी। यह अहसास करते हुए, मैं अक्सर हैरान होता हूं कि क्या वे बाहर जाने के लिए तैयार होंगी। क्या उन्हें संसार में रहना और उन्नति करना आ जाएगा? क्या वे अपनी सम्भाल करना सीख लेंगी? क्या उनका यीशु में दृढ़ विश्वास होगा जो उन्हें उनके सामने आने वाली प्रत्येक कठिन परिस्थिति में देखता है? मैं नहीं जानता कि उनका भविष्य क्या होगा, और एक पिता होने के नाते शायद मैं उन्हें उनके भविष्य के लिए तैयार कर पाया हूं।

हमारे पाठ के इस भाग में, यीशु एक पिता के रूप में अपने बच्चों को संसार में भेजने के लिए तैयार कर रहा लगता है। उसने कहा था कि वह अपने चेलों के साथ रहने के लिए, ''सहायक'' भेजेगा, वह सच्चाई हमें हमारे जीवन के लंगर के रूप में दे दी गई है, कि जैसे दिन के बाद रात आती है, वैसे ही आनन्द के बाद दुख भी आएगा, कि हमारी प्रार्थनाएं उस प्रेमी पिता द्वारा सुनी जाती हैं जो हमारी भलाई चाहता है और यह कि यीशु ने संसार पर विजय पा ली है। हमें और क्या सुनने की आवश्यकता है? हमारे जीवन में कल कुछ भी लेकर आए, अर्थात चाहे दुख हो या चैन, हम शांति से रह सकते हैं। यीशु ने हमें भविष्य के लिए तैयार किया है!

पाद टिप्पणियां

[1]यह कहानी उत्पत्ति 32:22–32 में मिलती है। [2]यूनानी शब्द, parakletos जिसका अर्थ ''सहायक,'' है, के लिए अंग्रेज़ी के अनुवाद में ''helper,'' ''counselor,'' ''comforter,'' ''advocate'' या ''जो साथ सहायता के लिए आता है।'' यहां इसका इस्तेमाल पवित्र आत्मा के लिए किया गया है जो यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों पर उंडेला गया था (प्रेरितों 2)।